ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा है हिन्दी

डॉ. सरोज

एसोशिएट प्रोफेसर , हिन्दी विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सारांश

हिन्दी सम्मान व गर्व की भाषा है। हमारी अस्मिता की पहचान है। हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। अंग्रेजी भाषा के बढ़ते चलन और हिन्दी की अनदेखी करना हमारी भूल है। हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। आजादी मिलने के दो साल बाद 1949 को संविधान सभा में एक मत से हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया था और इसके बाद से ही हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। हिंदी जनमानस की भाषा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए मैथिली शरण गुप्त, काका कालेलकर, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि ने दक्षिण भारत की यात्रा की थी। कहा कि हिंदी भाषा का अधिक प्रयोग करने की जरूरत है। हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी दिवस भारत में हर वर्ष '14 सितंबर' को मनाया जाता है। हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी हमारी 'राष्ट्रभाषा' भी है। वह दुनियाभर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हम आपको बता दें कि हिन्दी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी।

इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।

परिचय

धीरे-धीरे हिन्दीभाषा का प्रचलन बढ़ा और इस भाषा ने राष्ट्रभाषा का रूप ले लिया। अब हमारी राष्ट्रभाषा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है। इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे हैं। एक हिंदुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानी हिन्दी तो आनी ही चाहिए, साथ ही हमें हिन्दी का सम्मान भी करना सीखना होगा।

हिन्दी दिवस भारत में हर वर्ष '14 सितंबर' को मनाया जाता है। हिन्दी हिंदुस्तान की भाषा है। राष्ट्रभाषा किसी भी देश की पहचान और गौरव होती है। हिन्दी हिंदुस्तान को बांधती है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इसी कर्तव्य हेतु हम 14 सितंबर के दिन को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाते हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है। यही इस भाषा की पहचान भी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती। पहले के समय में अंग्रेजी का ज्यादा चलन नहीं हुआ करता था, तब यही भाषा भारतवासियों या भारत से बाहर रह रहे हर वर्ग के लिए सम्माननीय होती थी। लेकिन बदलते युग के साथ अंग्रेजी ने भारत की जमीं पर अपने पांव गड़ा लिए हैं।[1,2]
जिस वजह से आज हमारी राष्ट्रभाषा को हमें एक दिन के नाम से मनाना पड़ रहा है। पहले जहां स्कूलों में अंग्रेजी का माध्यम ज्यादा नहीं होता था, आज उनकी मांग बढ़ने के कारण देश के बड़े-बड़े स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे हिन्दी में पिछड़ रहे हैं। इतना

DOI: 10.15680/IJIRSET.2014.0310111

ही नहीं, उन्हें ठीक से हिन्दी लिखना और बोलना भी नहीं आती है। भारत में रहकर हिन्दी को महत्व न देना भी हमारी बहुत बड़ी भूल है।

अंग्रेजी बाजार में पिछड़ती हिंदी- आजकल अंग्रेजी बाजार के चलते दुनियाभर में हिंदी जानने और बोलने वाले को अनपढ़ या एक गंवार के रूप में देखा जाता है या यह कह सकते हैं कि हिन्दी बोलने वालों को लोग तुच्छ नजरिए से देखते हैं। यह कतई सही नहीं है।

हम हमारे ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैं और हम ही अपनी हिन्दी भाषा को वह मान-सम्मान नहीं दे पा रहे हैं, जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासियों के नजर में होना चाहिए। हम या आप जब भी किसी बड़े होटल या बिजनेस क्लास के लोगों के बीच खड़े होकर गर्व से अपनी मातृभाषा का प्रयोग कर रहे होते हैं तो उनके दिमाग में आपकी छवि एक गंवार की बनती है। घर पर बच्चा अतिथियों को अंग्रेजी में कविता आदि सुना दे तो माता-पिता गर्व महसूस करने लगते हैं। इन्हीं कारणों से लोग हिन्दी बोलने से घबराते हैं।

आज हर माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाते हैं। इन स्कूलों में विदेशी भाषाओं पर तो बहुत ध्यान दिया जाता है लेकिन हिन्दी की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता। लोगों को लगता है कि रोजगार के लिए इसमें कोई खास मौके नहीं मिलते। हिन्दी दिवस मनाने का अर्थ है गुम हो रही हिन्दी को बचाने के लिए एक प्रयास। कोई भी व्यक्ति अगर हिन्दी के अलावा अन्य भाषा में पारंगत है तो उसे दुनिया में ज्यादा ऊंचाई पर चढ़ने की बुलंदियां नजर आने लगती हैं चाहे वह कोई भी विदेशी भाषा हो, फ्रेंच या जर्मन या अन्य और ये कतई सही नहीं है।[3,4]

विचार – विमर्श

महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने मातृभाषा का महत्व कुछ इस प्रकार से बताया है-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।
अंग्रेजी पढिके जदपि, सब गुन होत प्रबीन ।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।।
विविध कला, शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहु, निज भाषा माँहि प्रचार ।।

हमे अपनी मातृभाषा को कभी भी नही भुलाना चाहिए । जिस तरह से एक गाय का दूध माँ का दूध नही हो सकता और न ही माँ का दूध गाय का दूध हो सकता है । हमारी मातृभाषा हमारी अपनी भाषा है जिसको सदैव याद रखना कि किस तरह से गांधीजी ने विदेशी भाषा का विरोध किया था । गाँधीजी ने कहा था कि यदि हमारा स्वराज अंग्रेजी के तरफ जाता है तो हमे अपनी राष्ट्र भाषा को अंग्रेजी कर देना चाहिए, यदि हमारा स्वराज हिंदी के तरफ जाता है तो हमे अपनी राष्ट्र भाषा को हिंदी कर देना चाहिए । इस बात कि परिवर्तित स्थितियों ने भाषा पर बहस को जन्म दिया है । जीवन में आधुनिकता के प्रवेश ने कई क्षेत्रों के स्वरूपों को प्रभावित करने का कार्य किया है ।[5,6]

मातृभाषा के प्रति महात्मा गांधी कहते थे कि ह्रदय की कोई भी भाषा नहीं है ह्रदय ह्रदय से बातचीत करता है और हिंदी ह्रदय की भाषा है यह पूर्णता सत्य है । हिंदी में वह क्षमता है जो आंखों से बहते आंसू धारा का वर्णन इस रूप में करती है कि उसे पढ़ने वाले पाठक को आंसू बहा रहे व्यक्ति की मन स्थिति का बोध हो जाता है । क्या किसी अन्य भाषा के भाव ह्रदय तल तक महसूस किए जा सकते हैं ?

हमारी हंसी किसी भी भाषा में अभिव्यक्त हो सकती है । किंतु दूसरों की पीड़ा, दर्द और उसके विचार का अनुभव मातृभाषा में ही होता है । यह भाव से भावों को जोड़ने कि एक कड़ी का कार्य करती है । समय के साथ कदमताल मिलाते हुए उन्नति और प्रगति के मार्ग पर चल सफल होना भी आवश्यक है । इसलिए अन्य भाषा का ज्ञान होना या उनका कार्य में प्रयोग करना

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

भी आना चाहिए ये बुरा नहीं है । किंतु अपनी मातृभाषा को अपमान भी किसी भी अर्थ में सही नहीं है । इस भाषा के उपयोग पर अपमान नहीं बल्कि अभिमान जैसे भावों के संचरण की आवश्यकता है क्योंकि यह भाषा हमारी पहचान है।
2004 के आंकड़े बताते हैं कि भारत में हिंदी जानने वालों की संख्या 80.5 करोड़ है। इसमें उर्दू 6 करोड़, मैथिली 2.4 करोड़, मारवाड़ी 1.2 करोड ,मगधी 1.1 करोड, हरियाणवी 1.3 करोड और छत्तीसगढ़ी 1.1 करोड बोलने वाले शामिल हैं। यदि इन्हें निकाल भी दिया जाए तब भी 62.2 करोड लोग शुद्ध रूप से हिंदी जानने वाले हैं। 2005 में प्रकाशित एक रपट में मंदारिन जानने वालों की संख्या 100.1 करोड़ बताई गई है। यह आंकडा चीनी भाषा परिवार को जोड़कर निकाला गया है। इसलिए सम्पूर्ण हिंदी परिवार की बात करें तो विश्व में हिंदी बोलने और जानने वालों की संख्या उससे भी कहीं ज्यादा है। दुनिया के कितने देश हिंदी जानते हैं यह जानना हम भारतवासियों के लिये गौरव और गर्व की बात हो सकती है। कुल मिला कर हिंदी विश्व मे बोली जाने वाली भाषा है, इसलिए निश्चित ही आज नहीं तो कल उसका बोलबाला होने ही वाला है।

परिणाम

इन दिनों हर जगह वैश्वीकरण की बातें होती हैं। अपने माल को सारी दुनिया में बेचो और खूब पैसा कमाओ। यदि विदेशी अपना माल ले कर दूसरे देश में जाएगा तो स्वाभाविक है कि उसी देश की भाषा में बोलेगा जिसमें उस का ग्राहक वस्तु को खरीदता है। इसलिए भारत में किसी माल को ला कर बेचना है तो फिर आप को हिंदी जानना अनिवार्य है। इसलिए विदेशी ताकतों के लिए हिंदी जानना बहुत ज़रूरी है। इसी प्रकार दुनिया में जहां भी भारतीय हैं हिंदी बोलना अधिक पसंद करते हैं। अमेरिका, चीन या जापान को अपना माल भारत सहित अन्य देश में-जहां हिंदी बोली जाती है लोकप्रिय बनाना है तो पहली शर्त हिंदी जानने की है। जो लोग सरकार चलाने के लिए अंग्रेजी को अनिवार्य मानते हैं और साथ ही ज्ञान-विज्ञान के लिए अंग्रेजी के पठन-पाठन को ज़रूरी समझते हैं उन्हें वैश्वीकरण के युग में यह भी स्वीकार करना होगा कि दुनिया में सब से अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी को ही अपना कर वे अपने व्यवसाय का उद्धार कर सकते हैं।[7,8]

अंग्रेजी को बनाए रखने के लिए यह दलील दी जाती है कि अंग्रेजी ज्ञान-विज्ञान की भाषा है। जब रूस और जर्मनी जैसे देशों ने सिध्द कर दिया कि अपनी मातृभाषा में ही विद्यार्थी अधिक सफल हो सकता है तो राष्ट्रीय एकता को मुद्दा बना लिया गया। दरअसल, देश को चला रहे कुछ भारतीय अंग्रेज अपना एकाधिकार न चला जाए इसलिए अंग्रेजी को ही सीने से चिपकाए रखने में विश्वास रखते हैं। विदेशी हितों को पालने-पोसने वाले किसी भी तरह अंग्रेजी को भारत में बनाए रखना चाहते हैं। अपनी मां के स्थान पर सौतेली मां की चाहत इस देश की बदनसीबी है।

हिंदी स्तब्ध है हिंदी दुखी है इसलिए हिंदी कहती है -

मैं हिन्दी हूं। बहुत दुखी हूं। स्तब्ध हूं। समझ में नहीं आता कहां से शुरू करूं? कैसे शुरू करूं? मैं, जिसकी पहचान इस देश से है, इसकी माटी से है। इसके कण-कण से हैं। अपने ही आंगन में बेइज्जत कर दी जाती हूं! कहने को संविधान के अनुच्छेद 343 में मुझे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है।

अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य है कि वह मेरा प्रसार बढ़ाएं। पर आज यह सब मुझे क्यों कहना पड़ रहा है? नहीं जानती थी मेरा किसी राज्य-विशेष में किसी की जुबान पर आना अपराध हो सकता है।

मन बहुत दुखता है जब मुझे अपनी ही संतानों को यह बताना पड़े कि मैं भारत के 70 प्रतिशत गांवों की अमराइयों में महकती हूं। मैं लोकगीतों की सुरीली तान में गुंजती हूं। मैं नवसाक्षरों का सुकोमल सहारा हूं। मैं जनसंचार का स्पंदन हूं।

मैं कलकल-छलछल करती नदिया की तरह हर आम और खास भारतीय ह्रदय में प्रवाहित होती हूं। मैं मंदिरों की घंटियों, मस्जिदों की अजान, गुरुद्वारे की शबद और चर्च की प्रार्थना की तरह पवित्र हूं। क्योंकि मैं आपकी, आप सबकी-अपनी हिन्दी हूं।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 12, December 2014

विश्वास करों मेरा कि मैं दिखावे की भाषा नहीं हूं, मैं झगड़ों की भाषा भी नहीं हूं।[9,10]

मैंने अपने अस्तित्व से लेकर आज तक कितनी ही सखी भाषाओं को अपने आंचल से बांधकर हर दिन एक नया रूप धारण किया है। फारसी, अरबी, उर्दू से लेकर आधुनिक बाला अंग्रेजी तक को आत्मीयता से अपनाया है। आधुनिक काल में मनुष्य अपनी सभ्यता तथा संस्कृति को खो दिया है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति एक सतत् संगीत है। संस्कृति, संस्कार से बनती है। सभ्यता बनती है नागरिकता से। किसी भी नागरिक की पहचान उसकी भाषा से ही होती है। किसी भी देश की नागरिकता का सम्बन्ध उस देश की भाषा से होता है। संस्कृति व सभ्यता ही मानवता का पाठ पढाती है। संस्कृति आशावाद सिखाती है। संस्कृति का दर्शन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। दर्शन जीवन का आधार है। संस्कृति बौद्धिक व मानसिक विकास में सहायक है। कवि रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार संस्कृति जीवन जीने का तरीका है। भारत का संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा से आया। संस्कृति शब्द का उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। ऐतरेय , ऋग्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ है। हिन्दी विदेशों में काफी फल-फूल रही है जो हर्ष का विषय़ है। विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में कफी अच्छे प्रयास हो रहे हैं।ऋग्वेद संपूर्ण ज्ञान व ऋचाओं (प्रार्थनाओं) का कोष है। ऋग्वेद मानव ऊर्जा का स्रोत है। अतएव हम कह सकते हैं कि हिंदी भाषा हिंदुस्तान कि संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक है।हमें संस्कृति और मूल्यों को बरकरार रखना चाहिए और हिंदी दिवस इसके लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। हिंदी भाषा राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है। हिन्दी ने देश की एकता व अखंडता को बनाए रखा है। साउथ, नार्थ-ईस्ट में भी हिन्दी का महत्व बढ़ा है।[11,12]

संदर्भ

1. ↑ "परिचय:: केंद्रीय हिंदी निदेशालय". मूल से 4 मई 2008
2. ↑ "Why Hindi isn't the national language". मूल से 3 जून 2009.
3. ↑ Khan, Saeed (25 जनवरी 2001). "There's no national language in India: Gujarat High Court". The Times of India. Ahmedabad: The Times Group. मूल से 18 मार्च 2002
4. ↑ Hindi is 3rd most spoken language in the world with 615 million speakers after English, Mandarin 2006
5. "These are the most powerful languages in the world". World Economic Forum. मूल से 24 मार्च 2002
6. ↑ "How languages intersect in India". Hindustan Times. मूल से 22 नवंबर 2001
7. ↑ "Hindi mother tongue of 44% in India, Bangla second most spoken". मूल से 20 जुलाई 2000 को पुरालेखित.
8. ↑ "What India speaks: South Indian languages are growing, but not as fast as Hindi". मूल से 16 फ़रवरी 2005.
9. ↑ "Only 12% Hindi speakers bilingual: Census". मूल से 13 नवंबर 2006
10. ↑ "How many Indians can you talk to?". www.hindustantimes.com. मूल से 22 नवंबर 2007
11. ↑ "Hindi the first choice of people in only 12 States". मूल से 6 जून 2008
12. ↑ "Hindi Diwas :Hindi travelled to these five countries from India". 14 सित° 2000

DOI: 10.15680/IJIRSET.2014.0310111